International Journal of Multidisciplinary Research and Growth Evaluation.

सामाजिक वर्जनाओं के मध्य विधवा स्त्री का प्रेम-दर्शन: 'रसीदी टिकट' और 'अन्या से अनन्या' का तुलनात्मक अध्ययन

पिंकी पंवार [1*], डॉ. भावना चितलांगिया [2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर-303122, राजस्थान, भारत
[2] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर-303122, राजस्थान, भारत

* Corresponding Author: **पिंकी पंवार**

Article Info

ISSN (Online): 2582-7138
Impact Factor (RSIF): 8.04
Volume: 07
Issue: 01
Received: 21-12-2025
Accepted: 19-01-2026
Published: 18-02-2026
Page No: 909-913

सारांश
प्रस्तुत शोध-पत्र अमृता प्रीतम की आत्मकथा 'रसीदी टिकट' और प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' के माध्यम से भारतीय समाज में विधवा स्त्री की स्थिति, उसके प्रेम और आत्मबोध का विश्लेषण करता है। भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में विधवा स्त्री का प्रेम प्रायः वर्जनाओं और लांछनों का शिकार रहा है। यह शोध अन्वेषण करता है कि कैसे ये दो लेखिकाएँ पारंपरिक 'विधवा छवि' (साध्वी या त्यागमयी) को अस्वीकार कर प्रेम को अपनी अस्मिता और भावनात्मक स्वातंत्र्य के रूप में चुनती हैं। जहाँ अमृता का प्रेम रूहानी और स्मृति-प्रधान है, वहीं प्रभा का प्रेम यथार्थवादी और देह-मन के संघर्षों से उपजा है।
'रसीदी टिकट' (अमृता प्रीतम) और 'अन्या से अनन्या' (प्रभा खेतान) दोनों ही कृतियाँ स्त्री विमर्श और समाज की रूढ़ियों को चुनौती देने वाले सशक्त दस्तावेज हैं। आपके तुलनात्मक अध्ययन के लिए शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण की-वर्ड्स (Key Words) नीचे दिए गए हैं।

DOI: https://doi.org/10.54660/.IJMRGE.2026.7.1.909-913

Keywords: पितृसत्तात्मक ढांचा (Patriarchal Structure, देहाती बनाम आधुनिक विमर्श, अकेलापन (Loneliness vs Solitude, नैतिकता का दोहरा मापदंड (Double Standards of Morality, आत्म-बोध (Self-Realization)

1. प्रस्तवना

1.1. भारतीय समाज और विधवा जीवन की विडंबना

भारतीय समाज में 'स्त्री' की पहचान सदैव किसी पुरुष के सापेक्ष ही तय की गई है पुत्री, पत्नी या माता। इस संरचना में 'विधवा' का अस्तित्व सबसे अधिक उपेक्षित और दमित रहा है। भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में 'विधवा' होना केवल एक वैवाहिक स्थिति का अंत नहीं, बल्कि एक सामाजिक मृत्यु के समान माना जाता रहा है। श्वेत वस्त्र, सादा भोजन और उत्सवों से दूरी ये केवल नियम नहीं, बल्कि वे बेड़ियाँ थीं जो स्त्री की आकांक्षाओं और उसके 'स्व' को कुचलने के लिए बनाई गई थीं।
परंपरागत साहित्य में भी विधवा को प्रायः दो ही ध्रुवों पर देखा गया: या तो वह 'करुणा की मूर्ति' (त्याग और तपस्या का पर्याय) बनकर उभरी, या फिर उसे 'कुलटा' कहकर समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। उसके भीतर के नैसर्गिक प्रेम, इच्छाओं और भावनात्मक आवश्यकताओं को सदैव अनसुना किया गया। किंतु, बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के संक्रमण काल में स्त्री आत्मकथाओं ने इस स्थापित 'चुप्पी' को तोड़ा है।

1.2. आत्मकथा का नया विमर्श: अमृता प्रीतम और प्रभा खेतान

साहित्य के इतिहास में अमृता प्रीतम और प्रभा खेतान वे नाम हैं जिन्होंने 'निजी' को 'सार्वजनिक' करने का साहस दिखाया। इन दोनों लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं 'रसीदी टिकट' और 'अन्या से अनन्या' के माध्यम से यह सिद्ध किया कि प्रेम कोई वर्जना नहीं, बल्कि एक अस्तित्ववादी आवश्यकता है।

अमृता प्रीतम की 'रसीदी टिकट' केवल उनके जीवन की घटनाओं का ब्यौरा नहीं है, बल्कि एक स्त्री के अंतर्मन का वह पारदर्शी दस्तावेज है जहाँ वह समाज की परवाह किए बिना अपने प्रेम (साहिर और इमरोज़) को स्वीकार करती हैं। वहीं, प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' पितृसत्तात्मक ढांचे और बाजारवाद के बीच एक ऐसी विधवा स्त्री के संघर्ष की गाथा है, जो अपने प्रेम को किसी कानूनी या सामाजिक प्रमाण-पत्र की कसौटी पर नहीं कसती।

1.3. रसीदी टिकट': रूहानी प्रेम और विद्रोह

अमृता प्रीतम ने जब 'रसीदी टिकट' लिखी, तब उन्होंने उन वर्जनाओं पर प्रहार किया जो विधवा या परित्यक्ता स्त्री को 'पवित्रता' के झूठे खोल में कैद रखना चाहती थीं। उनका प्रेम-दर्शन दैहिक सीमाओं से परे 'रूहानी' (आध्यात्मिक) था। साहिर लुधियानवी के प्रति उनकी दीवानगी और बाद में इमरोज़ के साथ उनका साहचर्य, समाज के उस मुँह पर तमाचा था जो विधवा या एकाकी स्त्री को केवल अभाव में जीने की सलाह देता है। अमृता का प्रेम-दर्शन यह स्पष्ट करता है कि प्रेम का अधिकार किसी वैवाहिक बंधन का मोहताज नहीं है; यह आत्मा का चुनाव है।

1.4. अन्या से अनन्या': यथार्थ और आर्थिक स्वावलंबन

प्रभा खेतान का संघर्ष अमृता से भिन्न और अधिक जटिल था। 'अन्या से अनन्या' में वे एक ऐसी विधवा स्त्री के रूप में सामने आती हैं जो एक विवाहित पुरुष (डॉ. सर्राफ) के साथ प्रेम संबंध में हैं। यहाँ प्रेम-दर्शन केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह 'सत्ता' और 'अधिकार' के द्वंद्व से भी गुजरता है। प्रभा खेतान ने विधवा स्त्री के लिए 'आर्थिक स्वतंत्रता' को अनिवार्य माना। उनकी आत्मकथा दर्शाती है कि समाज जिसे 'अन्यान' (दूसरी या पराई स्त्री) कहता है, वह कैसे अपने संघर्षों से गुजरकर 'अनन्या' (अद्वितीय या स्वयं की स्वामी) बनती है। उनका प्रेम दर्शन यथार्थवादी है, जहाँ वे प्रेम की गलियों में भटकते हुए भी अपनी पहचान नहीं खोतीं।

1.5. तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य और शोध का महत्व

इन दोनों आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन यह समझने के लिए आवश्यक है कि कैसे अलग-अलग कालखंड और परिवेश की दो स्त्रियाँ एक ही तरह की सामाजिक वर्जनाओं से टकराती हैं। जहाँ अमृता का स्वर काव्यात्मक और दार्शनिक है, वहीं प्रभा खेतान का स्वर तर्कसंगत और विद्रोही है।

1. क्या विधवा स्त्री को अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का संवैधानिक और सामाजिक अधिकार है?
2. समाज प्रेम को 'पवित्रता' और 'अपवित्रता' के चश्मे से क्यों देखता है?
3. प्रेम-दर्शन कैसे एक विधवा स्त्री के पुनर्निर्माण में सहायक होता है?

2. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

2.1. अमृता प्रीतम और रसीदी टिकट पर केंद्रित साहित्य

डॉ. नमिता सिंह (स्त्री विमर्श के विविध आयाम) इन्होंने अमृता प्रीतम के लेखन को 'मौन के पार की गूँज' कहा है। इनके अनुसार, 'रसीदी टिकट' भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में एक विधवा/परित्यक्ता स्त्री द्वारा अपने प्रेम को 'पवित्रता' के पाखंड से मुक्त करने का प्रथम साहसी प्रयास है। गोपी चंद नारंग, नारंग ने अमृता के प्रेम-दर्शन को 'सूफियाना' और 'रूमानियत' का संगम माना है। वे तर्क देते हैं कि अमृता ने प्रेम को शरीर की सीमा से निकालकर एक वैश्विक चेतना (Universal Consciousness) में बदल दिया, जहाँ वर्जनाएँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं। विद्वान समीक्षक पंकज बिष्ट: बिष्ट ने अमृता के साहिर और इमरोज़ के प्रति लगाव को एक ऐसी स्त्री की खोज माना है जो रूढ़ियों के बीच अपनी 'मनुष्यता' को बचाए रखना चाहती है।

2.2. प्रभा खेतान और अन्या से अनन्या पर केंद्रित साहित्य

मैत्रेयी पुष्पा, 'अन्या से अनन्या' की समीक्षा करते हुए पुष्पा लिखती हैं कि प्रभा खेतान ने 'परकीया' (दूसरी स्त्री) के कलंक को 'अस्तित्व' के गौरव में बदल दिया। उन्होंने दिखाया कि विधवा स्त्री के लिए प्रेम केवल भावना नहीं, बल्कि सत्ता के विरुद्ध एक राजनीतिक संघर्ष भी है। सुधा अरोड़ा, इन्होंने प्रभा खेतान के प्रेम-दर्शन को 'बाज़ारवाद और पितृसत्ता' के त्रिकोण पर परखा है। उनके अनुसार, प्रभा ने यह स्पष्ट किया कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के बिना विधवा स्त्री का प्रेम समाज के लिए केवल 'उपभोग' की वस्तु बनकर रह जाता है। रमणिका गुप्ता , गुप्ता ने इस आत्मकथा को 'अस्वीकृतियों के विरुद्ध विद्रोह' माना है। वे कहती हैं कि प्रभा ने अपनी कमियों और समाज की वर्जनाओं को बिना किसी लाग-लपेट के स्वीकार कर एक नई 'स्त्री नैतिकता' गढ़ी है।

2.3. तुलनात्मक अध्ययन एवं सैद्धांतिक पृष्ठभूमि (Conceptual Framework)

सिमोन द बोउआर (The Second Sex), इनके सिद्धांतों के आधार पर कई शोधार्थियों ने माना है कि विधवा स्त्री का प्रेम-दर्शन वास्तव में उसकी 'अधीनता' से 'स्वतंत्रता' की ओर यात्रा है। अमृता और प्रभा दोनों ही 'अदर' (Other) होने की स्थिति को नकारती हैं। भारतीय शोध पत्रिकाएँ (जैसे: हंस, वागर्थ): विभिन्न शोध आलेखों में यह रेखांकित किया गया है कि जहाँ अमृता का प्रेम 'भावनात्मक विद्रूपताओं' से लड़ता है, वहीं प्रभा का प्रेम 'कानूनी और सामाजिक पहचान' के संकट से जूझता है।

3. शोध अंतराल (Research Gap)

पूर्ववर्ती साहित्यों की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि:

1. अधिकांश कार्य इन आत्मकथाओं के स्त्रीवादी पक्ष पर हुए हैं।
2. 'विधवा' की विशिष्ट सामाजिक स्थिति और उसके 'प्रेम-दर्शन' के दार्शनिक पहलुओं का तुलनात्मक विश्लेषण अभी भी विस्तार की अपेक्षा रखता है।
3. विशेषकर, अमृता की 'सूफियाना वर्जना-मुक्ति' बनाम प्रभा की 'यथार्थवादी वर्जना-मुक्ति' का द्वंद्व इस शोध का मुख्य केंद्र बिंदु बनेगा।

4. सामाजिक वर्जनाएँ और विधवा का अस्तित्व

भारतीय समाज की संरचना में 'विधवा' का अस्तित्व सदैव हाशिए पर रहा है। पारंपरिक पितृसत्तात्मक ढांचा विधवा स्त्री को एक 'अशुद्ध' या 'अमंगल' इकाई के रूप में देखता है, जिसका एकमात्र धर्म अपनी समस्त इच्छाओं का गला घोंटकर स्मृतियों के सहारे जीवित रहना है। यहाँ वर्जनाएँ केवल बाहरी पहनावे तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे स्त्री की 'कामुकता' (Sexuality) और 'प्रेम' (Love) पर कड़ा पहरा बिठाती हैं। समाज की दृष्टि में विधवा का प्रेम करना केवल अनैतिक नहीं, बल्कि उसके 'चरित्र' का पतन माना जाता है।

4.1. अमृता प्रीतम के संदर्भ में: परंपरा का काव्यात्मक प्रतिकार

अमृता प्रीतम का व्यक्तित्व और उनका साहित्य दोनों ही वर्जनाओं को तोड़ने की एक लंबी प्रक्रिया हैं। सिख समाज की जकड़न और विभाजन की त्रासदी के बीच अमृता ने 'रसीदी टिकट' के माध्यम से अपनी भावनाओं को जिस बेबाकी से व्यक्त किया, वह अद्वितीय है। प्रेम का आत्म-साक्षात्कार: अमृता के लिए प्रेम कोई देह की भूख

नहीं, बल्कि अस्तित्व की पूर्णता थी। उन्होंने साहिर लुधियानवी के प्रति अपने अनुराग को कभी भी 'पाप बोध' के चश्मे से नहीं देखा। वे उस 'विधवापन' की अवधारणा को खारिज करती हैं जो स्त्री को केवल एक 'विगत' (Past) में जीने के लिए मजबूर करती है। वर्जनाओं का रूपांतरण: अमृता ने समाज द्वारा थोपे गए अकेलेपन को 'एकांत' (Solitude) में बदल दिया। 'रसीदी टिकट' में वे लिखती हैं कि उनकी कविताएँ उनके प्रेम की ही उपज हैं। इमरोज़ के साथ उनका बिना विवाह के रहना उस समय के कट्टरपंथी समाज के लिए एक असहज सत्य था, जिसे अमृता ने अपनी शर्तों पर जिया। उनके लिए विधवापन बाधा नहीं, बल्कि एक ऐसी खिड़की बनी जिससे उन्होंने दुनिया को 'स्व' के नजरिए से देखा।

4.2. प्रभा खेतान के संदर्भ में: मारवाड़ी समाज और दोहरी चुनौती

प्रभा खेतान का संदर्भ अमृता से अधिक कठोर और यथार्थवादी धरातल पर खड़ा है। मारवाड़ी समाज की व्यापारिक और नैतिक कठोरता के बीच एक विधवा स्त्री का 'अन्या' (दूसरी स्त्री) होना किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं था। विवाहित पुरुष से प्रेम का द्वंद्व, प्रभा खेतान का डॉ. सर्राफ के साथ संबंध सामाजिक वर्जनाओं की पराकाष्ठा को चुनौती देता है। समाज ने उनके लिए 'विधवा' का जो सांचा तय किया था—जिसमें त्याग और मौन था प्रभा ने उसे पूरी तरह अस्वीकार कर दिया। उन्होंने न केवल प्रेम किया, बल्कि उस प्रेम में अपने 'अधिकार' की मांग भी की। आर्थिक स्वावलंबन और पहचान: प्रभा का संघर्ष केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा का भी था। वे जानती थीं कि एक विधवा स्त्री को समाज तभी स्वीकार करता है जब वह या तो असहाय हो या देवी के समान त्यागी। प्रभा ने इन दोनों श्रेणियों को नकार कर एक 'सफल उद्यमी' और 'स्वतंत्र स्त्री' की पहचान बनाई। 'अन्या से अनन्या' की यात्रा इसी सामाजिक वर्जना के विरुद्ध एक जीवंत प्रमाण है कि एक विधवा स्त्री अपनी शून्यता को अपनी उपलब्धि में बदल सकती है।

4.3. अस्तित्ववादी संघर्ष:

जहाँ अमृता प्रीतम सामाजिक वर्जनाओं को अपने 'दार्शनिक और काव्यात्मक' बोध से परास्त करती हैं, वहीं प्रभा खेतान उन्हें 'यथार्थवादी और आर्थिक' सशक्तिकरण से चुनौती देती हैं। दोनों ही लेखिकाएँ इस तथ्य पर एकमत हैं कि विधवा का अस्तित्व पुरुष के जीवन या मृत्यु से बंधा हुआ नहीं है।

अमृता ने 'मन' के स्तर पर वर्जनाओं को तोड़ा, तो प्रभा ने 'तंत्र' के स्तर पर। इन दोनों आत्मकथाओं में प्रेम केवल एक भावना नहीं है, बल्कि वह उस दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ एक 'राजनीतिक वक्तव्य' (Political Statement) बन जाता है, जो स्त्री की इच्छाशक्ति को नियंत्रित करना चाहती है। इन आत्मकथाओं ने यह सिद्ध किया कि प्रेम-दर्शन ही वह प्रकाश है जो विधवा स्त्री को 'अभाव' के अंधकार से निकालकर 'अस्तित्व' के उजाले की ओर ले जाता है।

5. 'रसीदी टिकट' में प्रेम का दर्शन: स्मृति और स्वातंत्र्य

अमृता प्रीतम की आत्मकथा 'रसीदी टिकट' हिंदी और पंजाबी साहित्य का वह मोड़ है जहाँ 'प्रेम' को सामाजिक संकुचितता से निकालकर 'अस्तित्ववादी स्वतंत्रता' के धरातल पर खड़ा किया गया। अमृता के लिए प्रेम कोई देह-व्यापार या केवल वैवाहिक अनुबंध नहीं था, बल्कि वह एक 'सृजनात्मक ऊर्जा' थी।

5.1. रूहानी स्तर का प्रेम और सामाजिक नैतिकता

अमृता प्रीतम का प्रेम दर्शन पारंपरिक नैतिकता के 'सही और गलत' के खानों में फिट नहीं बैठता। समाज जिसे 'विधवा' या 'एकाकी स्त्री' की मर्यादित लक्ष्मण-रेखा कहता है, अमृता उसे पार कर एक ऐसे धरातल पर पहुँचती हैं जहाँ प्रेम 'रूहानी' (आध्यात्मिक) हो जाता है। साहिर: स्मृतियों का प्रेम, साहिर लुधियानवी के प्रति उनका अनुराग एक 'अधूरी पूर्णता' की तरह है। वे सिर्फ़ साहिर की जूठी सिगरेटों के टुकड़ों को पीकर उनके स्पर्श को महसूस करती थीं। यह दर्शाता है कि एक स्त्री का प्रेम समाज की अनुमति का मोहताज नहीं है; वह अपनी कल्पनाओं और स्मृतियों में भी स्वतंत्र है।

5.2. रसीदी टिकट: सार्थकता की स्वीकारोक्ति

अमृता का यह कहना कि—"मेरे जीवन की कोई कीमत है, तो वह सिर्फ एक रसीदी टिकट जितनी है"—एक गहरा दार्शनिक अर्थ छिपाए हुए है। खुशवंत सिंह ने जब उनसे कहा था कि तुम्हारी जिंदगी में ऐसी क्या घटनाएँ हैं कि तुम आत्मकथा लिखो, वह तो एक रसीदी टिकट के पीछे भी आ जाएगी, तब अमृता ने उसी अपमान को अपनी पहचान बना लिया।अवैधता बनाम सार्थकता: समाज जिसे 'अवैध' संबंध मानकर तिरस्कृत करता था, अमृता ने उसे ही अपने जीवन का 'राजस्व' (Revenue) माना। उनके लिए प्रेम वह मुहर थी जो उनके अस्तित्व के खाली पन्ने को 'वैध' और 'सार्थक' बनाती थी। यहाँ विधवा स्त्री की पीड़ा 'अभागन' होने में नहीं, बल्कि 'प्रेम-विहीन' होने में है।

5.3. ईर्ष्या और अधिकार से मुक्ति

अमृता के प्रेम-दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता 'अधिकार का अभाव' है। वे साहिर के जीवन में अन्य स्त्रियों की उपस्थिति से टूटती तो हैं, पर उन पर अधिकार नहीं जमातीं। एक विधवा स्त्री से अक्सर अपेक्षा की जाती है कि वह ईर्ष्यालु होगी या असुरक्षित, परंतु अमृता का प्रेम दर्शन उसे एक 'मुक्ताकाश' प्रदान करता है। उनके लिए प्रेम किसी को 'पाना' नहीं, बल्कि प्रेम में 'होना' है।

5.4. इमरोज़ और सह-जीवन (Live-in): सर्वोच्च स्वतंत्रता का प्रतीक

इमरोज़ के साथ अमृता का सात दशकों का साथ भारतीय समाज के चेहरे पर सबसे साहसी सवाल था। बिना किसी सात फेरों या रस्मों के, एक साथ रहना और एक-दूसरे की रचनात्मकता का पूरक बनना, 'विधवा' के उस सांचे को पूरी तरह ध्वस्त कर देता है जिसे पितृसत्ता ने गढ़ा था। स्वतंत्रता का चरम, यह सह-जीवन किसी विद्रोह के शोर से नहीं, बल्कि एक सहज स्वीकारोक्ति से उपजा था। यहाँ 'विधवापन' की राख से एक ऐसी 'स्वतंत्र स्त्री' का जन्म होता है जो यह तय करती है कि उसके घर की ड्योढ़ी पर कौन खड़ा होगा। इमरोज़ के साथ उनका प्रेम उस विधवा स्त्री का दर्शन है जिसने समाज की 'श्वेत साड़ी' को अपनी कलम और इमरोज़ के रंगों से रंगीन कर दिया।

5.5. रचनात्मकता का आधार

अमृता के लिए प्रेम विलास नहीं, 'इबादत' है। उन्होंने अपने अकेलेपन को रोने के बजाय उसे कविता में बदला। 'रसीदी टिकट' यह सिद्ध करती है कि प्रेम एक विधवा स्त्री को समाज से काटने के बजाय उसे स्वयं से जोड़ता है। उनका दर्शन यह है कि प्रेम ही वह एकमात्र 'रसीदी टिकट' है जो जीवन के सफर को मुकम्मल बनाता है।

इस बिंदु का विस्तार शोध की दार्शनिक गहराई और अमृता प्रीतम की संवेदनात्मक बारीकियों को ध्यान में रखते हुए नीचे दिया गया है:

6. अन्या से अनन्या में प्रेम: यथार्थ और अस्मिता

प्रभा खेतान का प्रेम-दर्शन अमृता प्रीतम की काव्यात्मकता के विपरीत ठोस धरातल और कठिन यथार्थ पर टिका है। यहाँ एक विधवा स्त्री का प्रेम केवल भावनाओं का ज्वार नहीं है, बल्कि अपनी खोई हुई 'अस्मिता' (Identity) को पुनः प्राप्त करने की एक लंबी और कष्टसाध्य प्रक्रिया है।

6.1. अन्या से अनन्या की दार्शनिक यात्रा

समाज में किसी विवाहित पुरुष के जीवन में शामिल दूसरी स्त्री को 'अन्या' (Other/दूसरी) कहकर अपमानित किया जाता है। प्रभा खेतान ने इस अपमानजनक संबोधन को ही अपने आत्मबोध का शीर्षक बनाया।

6.1.1. अस्मिता की खोज: डॉ. सर्राफ के साथ उनका संबंध समाज के लिए 'अनैतिक' और 'अवैध' था, लेकिन प्रभा के लिए वह स्वयं को पहचानने का एक माध्यम था। उन्होंने यह स्वीकार किया कि प्रेम में पड़ना कोई पाप नहीं, बल्कि एक मानवीय अधिकार है।

6.1.2. शून्यता से पूर्णता की ओर: विधवा होने के बाद समाज जिस शून्यता को स्त्री पर थोपता है, प्रभा ने उस शून्यता को डॉ. सर्राफ के प्रति अपने प्रेम से भर दिया। लेकिन यह प्रेम समर्पण मात्र नहीं था, बल्कि अपनी स्वतंत्र सत्ता को बचाए रखने का एक निरंतर संघर्ष था।

6.2. बौद्धिक स्वतंत्रता और समानांतर पहचान

प्रभा खेतान का प्रेम-दर्शन उन्हें 'छाया' बनने की अनुमति नहीं देता। वे स्पष्ट रूप से कहती हैं कि उन्हें किसी की 'विवाहिता' बनकर महलों में कैद नहीं होना था, बल्कि अपनी एक अलग पहचान बनानी थी।

6.2.1. व्यापारिक सफलता और स्वावलंबन: जहाँ पितृसत्तात्मक ढांचा विधवा को आर्थिक रूप से पंगु बना देता है, वहीं प्रभा ने चमड़े के व्यापार में अपनी धाक जमाई। उन्होंने सिद्ध किया कि प्रेम और करियर एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। उनकी व्यापारिक सफलता ने उन्हें वह आत्मबल दिया कि वे डॉ. सर्राफ के सामने एक याचक (Beggar) के रूप में नहीं, बल्कि एक बराबर के साथी के रूप में खड़ी हो सकें।

6.2.2. लेखकीय पहचान: उनका लेखन उनके प्रेम की घुटन और विस्तार दोनों को स्वर देता है। उन्होंने प्रेम को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी बौद्धिक प्रखरता का आधार बनाया।

6.3. देह और मन का संघर्ष: ईमानदारी का दर्शन

भारतीय समाज विधवा स्त्री को एक 'अदेह' (Desireless) प्राणी के रूप में देखना चाहता है। उसकी कामुकता और दैहिक इच्छाओं को वर्जित मान लिया जाता है।

देह की गरिमा, प्रभा खेतान ने 'अन्या से अनन्या' में अपनी देह और उसकी संवेदनाओं के प्रति अद्भुत ईमानदारी दिखाई है। उन्होंने उस पाखंड को तोड़ा जहाँ विधवा को केवल श्वेत वस्त्रों में लिपटी एक 'पवित्र मूर्ति' माना जाता है। उन्होंने स्वीकार किया कि विधवा स्त्री के भीतर भी प्रेम और देह की उतनी ही तीव्र पुकार होती है जितनी किसी अन्य मनुष्य में। संघर्ष और स्वीकारोक्ति, डॉ. सर्राफ के साथ अपने संबंधों के उतार-चढ़ाव को लिखते हुए वे कहीं भी स्वयं को 'बेचारी' नहीं दिखातीं। वे प्रेम में हारती हैं, टूटती हैं, ईर्ष्या भी करती हैं, लेकिन अपनी गरिमा को दांव पर नहीं लगातीं। उनका प्रेम-दर्शन यह सिखाता है कि विधवा का अस्तित्व किसी पुरुष की मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता, बल्कि वह अपनी देह और मन की संप्रभुता (Sovereignty) की स्वामी स्वयं है।

6.4. पितृसत्तात्मक सांचे का ध्वंस

प्रभा खेतान मारवाड़ी समाज की उन जड़ों से आती थीं जहाँ मर्यादाओं का पालन करना ही स्त्री का एकमात्र गुण माना जाता था। विवाहित पुरुष से प्रेम की जटिलता: एक विधवा के लिए किसी ऐसे पुरुष से प्रेम करना जो पहले से ही सामाजिक और कानूनी रूप से किसी और का है, दोहरी वर्जना थी। प्रभा ने इस जटिलता को जिया और इसे अपनी आत्मकथा में बिना किसी ग्लानि (Guilt) के दर्ज किया।

समाज को चुनौती: उन्होंने विधवा के उस 'सांचे' को तोड़ दिया जो समाज ने सदियों से तैयार किया था। उन्होंने यह संदेश दिया कि स्त्री का प्रेम उसकी अपनी संपत्ति है, जिसे वह अपनी पसंद के व्यक्ति पर खर्च कर सकती है, चाहे समाज उसे कोई भी नाम दे।

निष्कर्षतः, प्रभा खेतान के लिए प्रेम कोई मंजिल नहीं, बल्कि एक यात्रा थी। एक ऐसी यात्रा जिसने उन्हें एक असहाय 'विधवा' से एक सशक्त 'अनन्या' में बदल दिया। उनका प्रेम-दर्शन यथार्थवादी है, जहाँ वे प्रेम की गलियों में भटकते हुए भी अपने 'स्व' को नहीं खोतीं। उनकी आत्मकथा यह स्थापित करती है कि प्रेम ही वह माध्यम है जिससे एक स्त्री अपनी अस्मिता के बिखरे हुए टुकड़ों को जोड़कर एक संपूर्ण चित्र बना सकती है।

7. तुलनात्मक विश्लेषण: रसीदी टिकट बनाम अन्या से अनन्या

शोध के इस महत्वपूर्ण खंड में 'रसीदी टिकट' और 'अन्या से अनन्या' के माध्यम से विधवा स्त्री के प्रेम-दर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अमृता प्रीतम और प्रभा खेतान, दोनों ही लेखिकाओं ने पितृसत्तात्मक समाज द्वारा थोपी गई 'विधवा' की रूढ़िवादी छवि को चुनौती दी है, किंतु उनके प्रेम का धरातल और अभिव्यक्ति का मार्ग भिन्न है। जहाँ अमृता प्रीतम का प्रेम सामाजिक वर्जनाओं को लांघकर एक रूहानी और सूफियाना ऊँचाई प्राप्त करता है, वहीं प्रभा खेतान का प्रेम भौतिक यथार्थ, आर्थिक स्वतंत्रता और अपनी अस्मिता की निरंतर खोज से उपजा है। अमृता के यहाँ विद्रोह 'मौन' और 'सृजन' में व्यक्त होता है, जबकि प्रभा के यहाँ वह 'संवाद' और 'व्यापारिक जगत' की सफलताओं में दिखाई देता है। यह तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट करता है कि स्त्री का प्रेम-दर्शन केवल भावना नहीं, बल्कि उसके स्वतंत्र 'स्व' (Self) की स्थापना का सशक्त माध्यम है।

इन दोनों कृतियों के तुलनात्मक बिंदुओं को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से और अधिक स्पष्टता से समझा जा सकता है:

आधार	अमृता प्रीतम (रसीदी टिकट)	प्रभा खेतान (अन्या से अनन्या)
प्रेम का स्वरूप	आध्यात्मिक एवं काव्यात्मक	भौतिक, बौद्धिक एवं यथार्थवादी
विधवा की छवि	मर्यादाओं से ऊपर उठी 'रूह'	संघर्षरत और आत्मनिर्भर 'अस्मिता'
विद्रोह का माध्यम	मौन, कविता और आंतरिक स्वीकार्यता	मुखर संवाद, व्यापार और सामाजिक संघर्ष
स्वत्व (Self)	प्रेम में विलीन होने के बाद का 'स्व'	प्रेम के भीतर अपनी जगह तलाशता 'स्व'

7. निष्कर्ष

'रसीदी टिकट' और 'अन्या से अनन्या' का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि अमृता प्रीतम और प्रभा खेतान की आत्मकथाएँ केवल व्यक्तिगत जीवन का लेखा-जोखा नहीं हैं, बल्कि ये सामाजिक वर्जनाओं के विरुद्ध एक 'अस्तित्ववादी घोषणापत्र' हैं। भारतीय समाज में विधवा स्त्री के लिए जो 'पवित्रता' और 'त्याग' के कठोर प्रतिमान गढ़े गए थे, इन दोनों लेखिकाओं ने अपने प्रेम-दर्शन के माध्यम से उन्हें ध्वस्त कर दिया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि इन लेखिकाओं के लिए प्रेम केवल एक 'मानवीय इच्छा' नहीं थी, बल्कि एक 'वैचारिक विद्रोह' था। पितृसत्तात्मक समाज जिस विधवा को केवल शोक और शून्यता की प्रतिमूर्ति मानता था, अमृता और प्रभा ने उसी शून्यता को प्रेम की ऊर्जा से भर दिया। उन्होंने सिद्ध किया कि स्त्री का 'स्वत्व' किसी पुरुष की मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता। जहाँ अमृता ने समाज की परवाह किए बिना अपनी रूहानी सार्थकता को चुना, वहीं प्रभा ने अपनी देह और मन की ईमानदारी को सर्वोपरि रखा।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रेम ने इन स्त्रियों को कमजोर करने के बजाय उन्हें आंतरिक रूप से अधिक सशक्त बनाया है।

7.1 अमृता प्रीतम के लिए प्रेम वह 'रसीदी टिकट' बना जिसने उनके जीवन के दस्तावेज़ को मुकम्मल किया और उन्हें सामाजिक सीमाओं से मुक्त कर एक वैश्विक पहचान दी।

7.2 प्रभा खेतान के लिए प्रेम वह संघर्ष बना जिसने उन्हें 'अन्या' (दूसरी औरत) के संकुचित बोध से निकालकर 'अनन्या' (अद्वितीय और स्वतंत्र) के गौरव तक पहुँचाया।

इन दोनों कृतियों ने हिंदी साहित्य में विधवा विमर्श को एक नई दिशा दी है। यह प्रेम-दर्शन सिखाता है कि विधवा का प्रेम न तो पाप है और न ही विचलन, बल्कि यह उसके 'मनुष्य होने की शर्त' है। इन आत्मकथाओं ने समाज के उस अहंकार को तोड़ा है जो स्त्री की कामुकता और उसकी भावनाओं पर नियंत्रण रखना अपना अधिकार समझता था। अंततः, 'रसीदी टिकट' और 'अन्या से अनन्या' का तुलनात्मक अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि सामाजिक वर्जनाओं के बीच विधवा स्त्री का प्रेम-दर्शन वास्तव में 'स्व की खोज' का दर्शन है। यह प्रेम उन्हें समाज की कुरुपताओं से बचाकर एक ऐसे धरातल पर ले जाता है जहाँ वे अपनी शर्तों पर जी सकती हैं। ये रचनाएँ आज की स्त्री को यह संदेश देती हैं कि प्रेम और स्वतंत्रता एक-दूसरे के पूरक हैं, और समाज द्वारा थोपी गई कोई भी वर्जना आत्मा की पुकार से बड़ी नहीं हो सकती।

संदर्भ सूची

1. प्रीतम ए. रसीदी टिकट. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस; 1976।
2. खेतान पी. अन्या से अनन्या. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2003।
3. शुक्ल आर. हिंदी आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; 2018।
4. पाण्डेय एम. साहित्य और इतिहास-दृष्टि. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2010।
5. सिंह एस. स्त्री लेखन और अस्मिता. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2015।
6. Beauvoir Sd. The Second Sex. London: Vintage; 1949।
7. कुमार आर. संवाद और सरोकार: स्त्री-लेखन पर विमर्श. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 2012।
8. खेतान पी. अन्या से अनन्या. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2007।
9. सिंह एन. हिंदी आत्मकथा का स्त्री स्वर।
10. प्रभात यू. समकालीन महिला आत्मकथाओं में विद्रोह के स्वर।